

द्रव (von द्रव) n. das Flüssigsein, der tropfbare Zustand eines Körpers, Schmelzbarkeit TARKAS. 3. 17. सांनिधिकं द्रवत्वं न्यायैमित्तिकमथापरम् BRĀSHĀP. 153. fgg. VOP. 4. 17. द्रवत्वात्सर्वलीकानाम् HIT. 1. 87.

द्रवक u. dass. BRĀSHĀP. 30.

द्रवश्च (द्रवत् + चश्च) adj. von raschen Rossen geführt: रथ RV. 4. 43. 2.

द्रवत् (partic. praes. von 1. द्रु) 1) adj. a) laufend; s. u. द्रु. **द्रवत्** adv. im Lauf, flugs NAIGH. 2. 15. तावा पीतमुप द्रवत् RV. 1. 2. 5. 44. 7. द्रवयथा सेतुं विश्वतश्चिदुपेयं यज्ञमा वंहातु इन्द्रम् 3. 38. 2. 6. 43. 32. 8. 5. 7. — b) flüssig P. 6. 1. 24. S. h. Kār. zu P. 4. 1. 54. — 2) f. द्रवस्ती a) Fluss ÇABDAR. im ÇKDR. — b) N. einer Pflanze, *Anthericum tuberosum* Roxb., AK. 2. 4. 3. 6. Suçr. 1. 33. 8. 144. 16. 137. 14. 169. 19.

द्रवर् (von 1. द्रु) adj. rasch laufend RV. 4. 40. 2.

द्रवरा (द्रव + रस) f. Lack, Gummi RĀGAN. im ÇKDR.

द्रवस् gaqa काण्डादि zu P. 3. 1. 27. Davon denom. **द्रवस्य**, **द्रवस्येति** sich abwälzen (परिताप); um Jmd herum sein, aufcarten (परिचरण) ebend. — Viell. von 1. द्रु.

द्रवाधार (द्रव + धा) m. ein Behälter für Flüssigkeiten ÇKDR. = चुलुक (als verschieden vom vorherg.) ÇABDĀRTHAK. ebend.

द्रवाय्य adj. von 1. द्रु VOP. 26. 164. v. 1.

द्रवि (von 1. द्रु) m. Schmelzer (nach SĀJ.): द्रविर्न द्रावयति दारु धनन् RV. 6. 3. 4.

द्रविड 1) m. N. pr. eines Volkes (und des von ihm bewohnten Gebietes) an der Ostküste des Dekhan's, welches im System als zu Çūdra herabgesunkene Kshatrija betrachtet wird, AV. PARIC. in Verz. d. B. H. 93. M. 10. 22 (sg). 44. MBH. 14. 832. 2476. 2. 1174. 3. 10217. 13. 2158. HARIV. 9600. 12831. VARĀH. BRH. S. 4. 23. 9. 15. 19. 14. 19. 16. 2. 11. 31. 15. BHĀG. P. 4. 28. 30. 8. 4. 7. 24. 13. ते स्वेच्छ्या मम गिरा द्रविडाङ्गनाक्त-वाचामिवार्थमविचार्य विकल्पयति PRAB. 106. 16. ऽणिम्भु Verz. d. Oxf. H. No. 168. ऽदेशीय ebend. No. 170. द्रविडे विषये Verz. d. B. H. No. 437. Collectivname für 3 Völker: आन्धा: कर्णाटकाश्चैव गुर्जरा द्रविडास्तथा । मकाराष्ट्रा इति ख्याता: पश्चैते द्रविडा: स्मृता: ॥ VĀGHRAS. 236; vgl. u. द्राविड und COLEBR. Misc. Ess. II. 28. fg. Der Name des Volkes und Landes zurückgeführt auf einen Sohn Vṛshabhasvāmin's: इतश्च वृषभ-स्वामिसूनुर्द्रविड इत्यभूत् । यन्नाम (sic) द्रविडो देशः पप्रये बहुशस्यभूः ॥ ÇATR. 7. 1. — 2) f. ई N. einer Rāgiṇī HALĪJ. im ÇKDR. — Vgl. द्राविड.

द्रविण UNĀDIS. 2. 50. 1) n. AK. 3. 6. 3. 22. a) Gegenstand des Wunsches und Besitzes, Sache; Gut (auch von Unkörperlichem), Habe, Kostbarkeit, = धन NAIGH. 2. 10. NIB. 8. 1. AK. 2. 9. 91. 3. 4. 33. 55. H. 192. = वित्त und काञ्चन MED. p. 31. कथा नेश्चामि द्रविणं दोध्यानः RV. 4. 23. 4. कर्हिश्चानि द्रविणानि नः 9. 109. 9. तमस्य तपसि यद् विश्वं दिवि यद् द्रविणं यत्पृथिव्याम् 4. 5. 11. दधानि यज्ञं द्रविणं च देवता Anrufung und Stoff des Opfers 6. 70. 5. जुषेथा यज्ञं द्रविणं च धत्तमरिष्टैर्नः पथिभिः पार-यन्ता 89. 1. 10. 70. 7. इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दत्तस्य सुभात्व-मस्मे 2. 21. 6. क्वथा देवेषु द्रविणं सूक्तम् (दधाति) 7. 9. 1. 3. 2. 6. मृतयो द्रविणं भित्तमाणाः 7. 10. 3. 4. 41. 9. 10. 81. 1. द्रव्य, रत्न 4. 3. 12. 1. 94. 14. रायस्योषं द्रविणानि 4. 33. 10. 58. 10. प्रजा, द्रव्य 8. 33. 10. AV. 18. 3. 1. — ज्ञातिभ्यो द्रविणं दत्त्वा कन्यायै चैव M. 3. 31. तेनायुर्वर्धते राज्ञो द्रविणं राष्ट्रमेव च 7. 136. JĀG. 1. 61. MBH. 3. 2548. 2720. द्रपद्रविणगणसंयुक्ता ऽपि तनयः ad

HIT. Pr. 12. 13. आद्यानामये द्रविणमदनिःसंज्ञमनसाम् BHART. 3. 7. ऽरा-शयः RAGH. 4. 70. लोकाय द्रविणार्थिने KATHĀS. 22. 33. PRAB. 76. 12. द्रवि-णादानं BHĀG. P. 1. 7. 57. 2. 4. 2. 3. 9. 6. ऽदान 24. 3. द्राविडे द्रविणं दत्त्वा विमुञ्च्य ein Geschenk —, Geld geben RĀGĀ-TAR. 4. 603. Als m. pl. in der Bed. Güter erscheint das Wort BHĀG. P. 5. 14. 12. — b) Wesenhaftigkeit, Bestand; Vermögen, Kraft, = बल, पराक्रम NAIGH. 2. 9. NIB. 8. 1. AK. 2. 8. 3. 70. 3. 4. 33. 55. MED. स नैः पावको द्रविणे (TS. und KĪTJ. lesen द्रविणं) दधावापुष्मत्तः सूक्तभक्ताः स्याम AV. 6. 47. 1. सके पिशाचात्स-कृतेषां द्रविणं देदे 4. 36. 4. पुनर्मेत्विन्द्रियं पुनरात्मा द्रविणं ब्राह्मणं च 7. 67. 1. अथैतु सर्वं मत्पापं द्रविणं मोयं तिष्ठतु 10. 1. 10. 3. 37. वर्चस्, द्रविण 12. 5. 8. ÇAT. BR. 14. 9. 4. 6. TS. 4. 4. 3. 1. (यतो जायते) महे वाजाय द्रवि-णाय दर्शतः RV. 3. 10. 6. यथा शमधं कर्मसद्गुरोणो तत्सूर्य द्रविणं धेहि चि-त्रम् 10. 37. 10. तद्वो यामि द्रविणं येना स्वर्णं ततनाम् नृभिः 5. 54. 15. द्रपद्रविणसंपन्नावयिना R. 1. 16. 15. — c) N. eines Sāman Ind. St. 3. 220. — 2) m. N. pr. a) eines Sohnes des Vasu Dhara (Dhava VP.) MBH. 1. 2585. HARIV. 133. VP. 120. — b) eines Sohnes des Prthu BHĀG. P. 4. 22. 54; vgl. द्रविणस्. — c) pl. der Bewohner eines Varsha in Krauṇ-kadvipa BHĀG. P. 5. 20. 22. — d) eines Berges BHĀG. P. 5. 20. 15. — Vgl. द्रविणस् und द्रव्य.

द्रविणक m. N. pr. eines Sohnes des Vasu Agni BHĀG. P. 6. 6. 13. — Vgl. द्रविण 2, a.

द्रविणानाशन (द्र + ना) m. N. einer Pflanze, *Hyperanthera Mo- ringa* Vahl. (शोभाञ्जन), ÇABDAR. im ÇKDR.

द्रविणवत् (von द्रविण) adj. 1) Güter mit sich führend, segnenbrin- gend: रथेतर द्रविणवत् रथि PĀNĀV. BR. 7. 7. 19. — 2) stark, kräftig: बभूवतुस्ततस्तस्य पत्नौ द्रविणवत्तौ MBH. 3. 3889. बलेः पुत्रो मरुत्वीर्यो वाणो द्रविणवत्तरः HARIV. 9135.

द्रविणाम् 1) n. proparox. = द्रविण 1: द्रविणोदा द्रविणसः RV. 1. 13. 7. 96. 8. (आ यात) महे नरो द्रविणतो गृणानाः 4. 34. 5. आ सोमं यातुं द्र-विणो दधाना 6. 69. 3. voc. Anrede an Agni 3. 7. 10 (nach SĀJ. laufend, eilend). — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Prthu, = द्रविण BHĀG. P. 4. 24. 2. — Vgl. im Zend draoṇd.

द्रविणस्यु (von द्रविण oder द्रविणस्) adj. P. 7. 4. 36. nach einem Gut u. s. w. verlangend: द्रविणस्युर्द्रविणसश्चक्रानः RV. 10. 64. 16. 5. 13. 2. von Agni, der den Menschen Gegenstände des Wunsches verschafft, 2. 6. 3. 6. 16. 34.

द्रविणस्वत् (von द्रविणस्) adj. Güter bei sich führend, — verschaf- fend, segnenbringend: द्रविणस्वत् इह सन्निद्वः RV. 9. 83. 1.

द्रविणाधिपति (द्र + अधि) m. der Herr der Kostbarkeiten, Bein. Kuvera's R. 5. 73. 28.

द्रविणीय (denom. von द्रविण), ऽपति P. 7. 4. 36. Sch.

द्रविणेश्वर (द्र + ईश्वर) m. = द्रविणार्थिपति PĀNĀT. III. 238.

द्रविणोद्, ऽद्स् und दा (द्रविणस् + द, दस्, दा) adj. mit den Flexions- Formen sg. nom. ऽदस्, acc. ऽदम्, voc. ऽदस्, dat. ऽदसे (Schol. zu KĪTJ. Ça. 9. 13. 19); du. ऽदै; pl. nom. ऽदस् und ऽदसस्, loc. ऽदेषु; (erwünsch- tes) Gut gebend, — bringend, — verschaffend NAIGH. 3. 2. NIB. 8. 1. 2. तमये द्रविणोदा श्रृङ्कते त्वं देवः संविता रत्नधा अंसि RV. 2. 1. 7. 1. 96. 1. 8. 2. 6. 3. 37. 1. Tvashṭar 10. 70. 9. 92. 11. देवाः VS. 12. 2 (vgl. aber RV.